ईमानदार अफसर की शहादत

एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे उन अफसरों में है जो एसीपी अशोक कामटे और इंसपेक्टर विजय सालस्कर के साथ छिपे हुए आतंकियों का निशाना बने

कुछ लोग जीते हुए भी मर समान होते हैं, कुछ मरने के बाद भी जीते रहते हैं, हमारे अहसासों में, दिलों में और इतिहास में भी। ऐसे ही शख्स थे हेमन्त करकर। मुम्बई एंटी टेररिस्ट स्कॉयड के मुखिया इस तरह मार जायेंगे, यह तो किसी ने नहीं सोचा था। मुम्बई में आतंकी हमले के वक्त लोगों की जान बचाने निकले करकर पर आतंकियों ने पीछे से कायराना हमला कर उन्हें हमेशा के लिए सुला दिया। उन्हें जवाबी हमले का भी वक्त नहीं दिया। वैसे आतंकियों से कोई बहादुराना हरकत की अपेक्षा नहीं कर सकता है। उनका न कोई मकसद होता है और न ही कोई सिद्धांत। वे मानवता के दुश्मन के अलावा और कुछ नहीं हैं। बीते कुछ दिनों से हेमन्त करकर मालेगांव बम बिस्फोट की जांच को लेकर चर्चा में थे।

साध्वी प्रज्ञा भारती की इस मामले में गिरफ्तारी के बाद हिन्दूवादी ताकतें उन पर पिल गई थीं। भाजपा के पीएम इन वेटिंग लालकृष्ण आडवाणी तक ने एटीएस को संदेह में घेर में खड़ा कर दिया था और न्यायिक जांच की मांग की थी। यही नहीं गाहे-बगाहे उन्हें जान से मारने की धमकियां भी आ रही थीं। लेकन वे उन पर तवज्जो नहीं दे रहे थे। पूछने पर सिर्फ इतना ही कहते-नथिंग सीरियस। अपनी हत्या से एक दिन पहले उन्होंने कहा था कि हम बहुत जल्द ही मालेगांव मामले को सुलझा लेंगे। वे इस बात से भी दु:खी थे कि मालेगांव जांच को लेकर उन पर बहुत दबाव आ रहा है। वे कहते कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता है।

करकर की अपने महकमे में एक ईमानदार और निष्ठावान अधिकारी की छवि रही है। किसी भी काम को डूब कर करते। 26 नवम्बर 1954 में जन्मे करकर 1982 बैच के आईपीएस अधिकारी थे। उन्होंने अपने बैच में टॉप किया था और तीन गोल्ड मैडल हासिल किए थे। उन्होंने नागपुर से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की थी। पुलिस में आने से पहले वे नेशनल प्रोडक्टविटी काउन्सिल और हिन्दुस्तान लीवर के इंजीनियरिंग विभाग में काम कर चुके थे। वे वैसे आईएएस अधिकारी बनकर कलेक्टर बनना चाहते थे।

वे जिस काम को करते, पूरी तरह से उसमें घुस जाते। नब्बे के दशक के आसपास जब नवगठित आर्थिक अपराध शाखा में उनकी पोस्टिंग हुई तो उन्होंने इक्वटी से लेकर सिक्योरिटी तक सबका अध्ययन किया। इसी तरह महाराष्ट्र के नक्सल प्रभावित चंद्रपुर इलाके में जब पोस्टिंग हुई तो उन्होंने माओत्सेतुंग की किताब आन गोरिल्ला वार पढ़ी। आदिवासियों के बीच घूमे। उनके नवजवानों की खोज की। उनमें से कई को कांस्टेबिल बनाया। प्रभावित क्षेत्रों के लोगों से संवाद स्थापित किया। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के महत्व को उनको समझाया। 2000 में खुफिया एजेन्सी रॉ में उन्हें आस्ट्रीया भेजा गया।

2006 में वे भारत आये और एंटी करप्शन ब्यूरो। इसके बाद वे पुलिस प्रबंधन विभाग से होते हुए एंटी टेररिस्ट स्कॉवयड पहुंचे थे। करकर की दो बेटियां और एक बेटा हैं। बड़ी बेटी की हाल में अमेरिका में शादी हुई है। बेटा मुंबई में और बेटी लंदन में पढ़ती है। करकर अच्छे वक्ता थे। उन्हें देशभर से भाषण देने के लिये निमंत्रण आते रहते थे। वे शायद अकेले एसे पुलिस अफसर थे, जिनके प्रशंसकों ने (सोलापुर में) एक फैन क्लब भी बना रखा है। करकर फैन क्लब ने उनकी मौत के बाद सोलापुर बंद का ऐलान किया है। पढ़ने के भी वे शौकीन थे। प्रतिदिन वे दो घंटे पढ़ते थे। अब वे हमार बीच नहीं हैं। उन्हें हम अपना सलाम देते हैं।

पहले पेज से जारी...

आज की परिस्थितियों में इस्राइल हमारा आदर्श नहीं हो सकता, लेकिन अपने दुश्मन का अंतिम बिंदु तक पीछा करने की उसकी इच्छाशक्ति को हमें सलाम करना ही होगा। जिस देश को आतंकवादी अपनी सैरगाह मानते हों, उस देश में कोई पर्यटक सैर करने भला क्यों आएगा? जिस देश में विदेशी व्यापारियों को सुरक्षा की गारंटी नहीं मिल सकती, वहां कोई क्यों व्यापार करने आएगा? दुनिया यों ही आर्थिक मंदी की शिकार है, ऐसे में हम कैसे अपनी आर्थिक तरक्की की रफ्तार बनाए रख पाएंगे? दिनकर जी ने बहुत पहले कहा था, क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो। न हमारे पास गरल है, न हम डंक मार पाते हैं। ऐसे में हम क्षमाशील सॉफ्ट स्टेट होने का दंभ भरते हैं, तो यह हमारा राजनीतिक दोमुंहापन ही है।

जीत ली आतंक पर जंग...लेकिन

किस बात पर गर्व करें ? पांच मासूम जानें और एक बेशकीमती सैनिक खो देने के बाद दो आतंकवादियों के सफाए पर ? 10-20-50 लोग मनचाहे हथियार और गोलाबारूद लेकर आपके देश में घुसते हैं। जहां चाहे बम फोड. देते हैं। खुलेआम सडक़ों पर फायरिंग करते हैं। आपकी बेहद आलीशान और सुरक्षित इमारतों पर कब्जा कर लेते हैं। आपकी पुलिस के सबसे बडे. ओहदों पर बैठे अफसरों को मार गिराते हैं। सैकडों लोगों को कत्ल कर देते हैं। आपके मेहमानों को बंधक बना लेते हैं। आपकी खेल प्रतियोगिताओं को बंद करवा देते हैं। आपके प्रधानमंत्री और बडे.-बडे. नेताओं की घिग्घी बांध देते हैं। तीन दिन तक आपके सबसे कुशल सैकडों सैनिकों के साथ चूहे-बिल्ली का खेल खेलते हैं और इसलिए मारे जाते हैं क्योंकि वे सोचकर आए थे...इसे आप जीत कहेंगे ? क्या यह गर्व करने लायक बात है ?

आपको क्या लगता है , देश पर सबसे बडा आतंकी हमला करनेवाले आतंकवादियों को मारकर आतंक के खिलाफ यह जंग हमने जीत ली है ? हम इस जंग में बुरी तरह हार गए हैं। उन लोगों ने जो चाहा किया , जिसे चाहा मारा , जिस हद तक खींच सके खींचा। आपको क्या लगता है , बंधकों को सेना ने बचाया है ? जब वे होटलों में घुसे तो हजारों लोग उनके निशाने पर थे। वे चाहते तो सबको मार सकते थे। उनके पास इतना गोला-बारूद था कि ताज और ओबरॉय होटेलों का नाम-ओ-निशान तक नहीं बचता। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने इंतजार किया कि पूरी दुनिया का मीडिया उनके आगे घुटने टेक कर और जमीन पर लेटकर यह दिखाने को मजबूर हो जाए कि वे क्या कर सकते हैं। उनकी चलाई एक-एक गोली पर रिपोर्टर्स चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे देखिए एक गोली और चली। इसे आप जीत कहेंगे ?

यह देश पर सबसे बडा आतंकी हमला था...1993 के बम ब्लास्ट के बाद भी यही कहा गया था। जब वे हमारा जहाज कंधार उडा ले गए थे , तब भी यही कहा था। संसद पर हमला हुआ तब भी यह शब्द थे। अहमदाबाद को उडाया था , तब भी सब यही सोच रहे थे। दिल्ली , जयपुर , मुंबई लोकल...हर बार उनका हमला बडा होता गया...क्या लगता है अब इससे बडा हमला नहीं हो सकता ? बडे. आराम से होगा और हम तब भी यही कह रहे होंगे।

क्या इसका इलाज अफजल की फांसी में है ? क्या इसका इलाज पाकिस्तान पर हमले में है ? क्या इसका इलाज पोटा में है ? आतंकियों ने अपने ई-मेल में लिखा था कि वे महाराष्ट्र एटीएस के मुसलमानों पर जुल्म का बदला ले रहे हैं। वे गुजरात का बदला ले रहे हैं। वे आजमगढ. का बदला ले रहे हैं।

वे धर्म के नाम पर लड. रहे हैं। भले ही उनकी गोलियों से मुसलमान भी मरे , लेकिन वे मुसलमानों के नाम पर लड. रहे हैं। शर्म आनी चाहिए उन मुसलमानों को जो इस लडाई को अपनी मानते हैं। लेकिन यूपी के किसी छोटे से शहर के कॉलेज में पढने वाला 20-25 साल का मुस्लिम लडक़ा जब देखेगा कि आजमगढ. से हुई किसी भी गिरफ्तारी को सही ठहरा देने वाले लोग कर्नल पुरोहित और दयानंद पांडे से चल रही पूछताछ पर ही सवाल उठा देते हैं , तो क्या वह धर्म के नाम पर हो रही इस लडाई से प्रभावित नहीं होगा ? क्या गुजरात को गोधरा की ' प्रतिक्रिया ' बताने वाले लोग मुंबई को गुजरात की प्रतिक्रिया मानने से इनकार कर पाएंगे ?

और अब क्या इस प्रतिक्रिया की प्रतिक्रिया यह हो कि कुछ और मालेगांव किए जाएं ? और फिर जवाबी प्रतिक्रिया का इंतजार किया जाए ? फिर हिंदू प्रतिक्रिया हो... फिर...लेकिन क्या इससे आतंकवादी हमले बंद हो जाएंगे ? क्या इससे जंग जीती जा सकेगी ?

जो लोग कहते हैं कि अफजल को फांसी हो जाती तो ऐसे हमले नहीं होते , वे भूल जाते हैं कि ये सारे आतंकवादी वे हैं जो जानते हैं कि वे इस ऑपरेशन में बच नहीं पाएंगे। वे मरने और मारने के लिए ही आए हैं। इसलिए यह कहना कि मौत का डर कुछ और लोगों को आतंकवादी बनने से रोक देगा , नादानी है।

हिफाजत हर सरकार का नैतिक दायित्व है

विशेष टिप्पणी

सुरेन्द्र बंसल

वह वक्त आ गया जब केन्द्र सरकार में पदस्थ गृहमंत्री शिवराज पाटिल को यह नैतिक अहसास हो गया कि खौफनाक मंजर से गुजरे बीत तीन दिनों में वे देश भर के उन लोगों की नजर से अपदस्थ हो गए हैं जो उन्हें राष्ट्र के दिल मुंबई में आतंक के तूफान का दोषी मानता है. उन्हें यह अहसास तब और हो गया जब सोने से पहले उनके अपने राज परिवार ने त्यौरियां चढ़ाकर उन्हें अक्षम और दोषी करार दे दिया.

रविवार को उन्होंने शायद सुबह का नाश्ता भी ठीक से नहीं किया और नैतिक दायित्व की धूरी पर इस्तीफे का पत्र प्रधानमंत्री की ओर बढ़ा दिया. दरअसल मुंबई आतंक के साये की गिरफ्त में रही तो नजरें तो अपनी भी झुक गई, जब तक आखिरी आतंकवादी ताज में रहा देशभर के लोगों को लगता रहा वह असहाय और कुछ करने की स्थिति में क्यों नहीं है. फिर शिवराज पाटिल तो केन्द्रीय गृहमंत्री थे उनकी बैचेनी तो कई गुना ज्यादा होगी पर उससे कहीं ज्यादा वे एक लाचार गृहमंत्री नजर आये, जिन्होंने देश की लाज को विश्वभर में गिराकर लज्जित कर दिया. अंतर्राष्ट्रीय मीडिया, खुफिया एजेंसियां और कई देश भारत की इस कमजोर स्थिति और कमजोर सरकार की सख्त आलोचना कर रही है.

आज जब हरेक देशवासी इस घटना से शर्मसार हुआ है वहीं हमारे बहादुर कमांडों ने जिस तरह से आतंकियों का सफाया किया उससे इस जज्बे में जबरदस्त बढ़ोत्तरी हुई है कि अब हर हाल में आतंकवाद को पनाह देने वालों से दो-दो हाथ कर लेना चाहिए. यदि शिवराज पाटिल के इस्तीफे तक ही सरकार रूक गई तो फिर देशवासियों के एकजुट जज्बें पर चोट होगी. जिस नैतिकता की ओट में शिवराज पाटिल केन्द्र सरकार से बाहर हुए हैं उस नैतिकता को जीवित रखना है तो इससे आगे बढ़कर केन्द्र सरकार को वह हरसंभव प्रयास करना होंगे जो अब फिर किसी ओबेराय, ताज, नरीमन हाऊस या शिवाजी टर्मिनल के साथ सड़कों पर दौड़ता आतंक न फैले और न नजर आए. अब हमें इस जज्बें की सरकार चाहिए फिर इसके लिए कोई भी सरकार केन्द्र में हो चाहे यूपीए या चाहे एनडीए. हर सरकार में आतंक से निपटने का जज्बा और उसके आतंक के रक्षकों को मुंहतोड़ जवाब देने की भरपूर क्षमता, साहस होना चाहिए. यही किसी भी सरकार का राष्ट्र के प्रति नैतिक दायित्व भी है. राष्ट्र हमारी मूल्यवान धरोहर है और इसकी हिफाजत एक संकल्पित नैतिक कर्तव्य है.

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८